❶

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

समस्त देशवासियों को ज्योति पर्व दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

वर्ष 46, अंक 47 एक प्रति : 5 रुपये

सोमवार 6 नवम्बर, 2023 से रविवार 12 नवम्बर, 2023

विक्रमी सम्वत् 2080 सृष्टि सम्वत् 1960853124

दयानन्दाब्द : 200 पृष्ठ 8

वार्षिक शुल्क : 250 रुपये दूरभाष: 23360150

ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

इंटरनेट पर पढ़ें-www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के निर्वाण दिवस पर विशेष स्मरण

हे गुरुवर, ऋषि देव दयानन्द ! तुम्हें प्रणाम

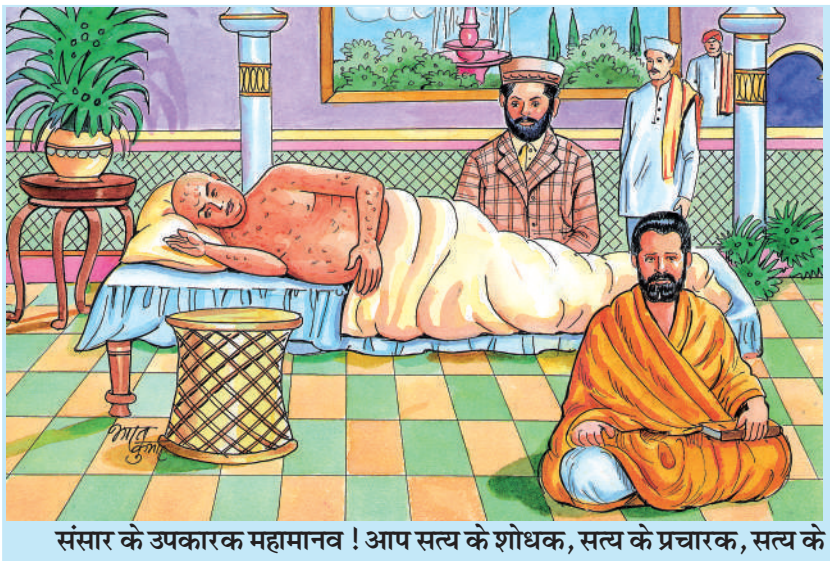

- डॉ. महेश विद्यालंकार

भारत के भाग्योदय के उज्ज्वलतम प्रकाशरूप देवात्मा गुरुवर ऋषि देव दयानन्द तुम्हें इस नश्वर व निरीह संसार से विदा हुए लगभग 140 वर्ष हो चुके हैं। प्रतिवर्ष आपका जन्मोत्सव, बोधोत्सव और निर्वाणोत्सव आदि बहिर्जगत में मनाकर तुम्हारे नाम की संस्थाएं, संगठन और आर्य समाज वाचिक रूप से स्मरण तथा जयघोष कर निष्ठापूर्वक करती हैं। सदियों के बाद धराधाम का सौभाग्य जागा था जो आप जैसा प्रभु का वरद-पुत्र और कांति पुंज संसार में आया था। आप दैवीय गुणों से युक्त, वेदों के रक्षक और वैदिक धर्म के उद्धारक बनकर आए। आपका तेजस्वी, वर्चस्वी तथा ओजस्वी व्यक्तित्व, कृतित्व अपूर्व व चुम्बकीय था। आपका जीवन दर्शन और संसार का उपकार करना अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय है। आपका तप, त्याग, तपस्या, उपकार, बलिदान आदि का इतिहास विश्ववंद्य है। आपने न जाने कितने लोगों को नव जीवन दृष्टि दी। आपने सुप्त भारतीय संस्कृति, सभ्यता और जीवन मूल्यों के प्रति लोगों में दृष्टि, विचार और चिन्तन दिया। आपने भारतीय स्वर्णिम उज्ज्वलतम इतिहास के प्रेरक पृष्ठों को संसार के सामने रखा। आपको जिसने सुना, देखा, पढ़ा और संपर्क में आया वह अमूल्य हीरा बन गया। गुरुवर आप क्या थे? सच्चे अर्थ में यह संसार आज तक न जान सका, न पहचान सका और न समझ सका?

संसार के उपकारक महामानव ! आप सत्य के शोधक, सत्य के प्रचारक, सत्य के वक्ता, सत्य के पुजारी और अन्त में सत्य पर ही शहीद हो गए। आपका आकर्षण व विशेषता अत्यंत उल्लेखनीय है। सत्य के प्रचार-प्रसार के मार्ग में पाखंड, आडंबर, पीर-पैग़म्बर, गुरु, संत महाराज आदि अन्यों को आपने तर्क, प्रमाण, युक्ति, शास्त्रार्थ, उपयोगी चिन्तन आदि से परास्त कर 'सत्यमेव जयते' को अमर रखा। आपका संकल्प था 'सत्यं वदिष्यामि।' इस सत्य के पालन व आचरण के कारण कितनी बार हलाहल विष, पत्थर खाए, अपमान सहा, भूखे रहे, सचमुच आप आजीवन विषपायी थे।

संसार के उपकारक महामानव ! आप सत्य के शोधक, सत्य के प्रचारक, सत्य के वक्ता, सत्य के पुजारी और अंत में सत्य पर ही शहीद हो गए। आपका आकर्षण व विशेषता अत्यंत उल्लेखनीय है। सत्य के प्रचार-प्रसार के मार्ग में

- शेष पृष्ठ 6 पर

ओ३म्

ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद

भावभीनी श्रद्धांजलि

महर्षि दयानंद सरस्वती

की 200वीं जयंती के विशेष आयोजनों की श्रृंखला में

140वें निर्वाण दिवस

की पूर्व संध्या पर भव्य आयोजन

शनिवार, 11 नवंबर 2023

अपराह्न 3:30 से 6:30बजे

रामलीला मैदान, अजमेरी गेट, नई दिल्ली- 2

दिल्ली की समस्त आर्य समाजों एवं संस्थाओं की ओर से

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य (पं.)

15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

Samaano mantrah samitih samaani samaanam manah saha chittameshaam|
Samaanam mantramabhi mantraye vah samaanena vo havishaa juhomi||
- Rig 8-49-3

Commemorating

200 YEARS OF MAHARSHI DAYANAND BIRTH

150 YEARS OF ARYA SAMAJ FOUNDATION

INTERNATIONAL ARYA MAHASAMMELAN

(Largest Global Summit of Arya Samaj Ever, outside India)

HOSTED BY ARYA SAMAJS OF TRI-STATE OF NEW YORK, NEW JERSEY AND CONNECTICUT

July 18-21, 2024 | New York

Featuring

Keynotes from World-renowned Vedic Scholars

Symposiums/Exhibits featuring Life of Maharshi Dayanand and Contribution of Arya Samaj

Workshops on Vedic Meditation, Healthy Living, Mental Health

Arya Samaj Strategy Roundtable Discussions and Leadership Summit

- 200 Multi Kund Mahayajnya
- Vedic Book Fair
- Global Youth Camp
- Arya Parivar Reunion
- Presentations from Arya Samajs Across the Globe
- Captivating Cultural Programs

महासम्मेलन में भाग लेने के इच्छुक महानुभाव तत्काल रजिस्ट्रेशन कराएं

https://tinyurl.com/iams2024ny

STAY TUNED FOR MORE INFORMATION : www.aryasamaj.com

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं 150वें स्थापना वर्ष पर आर्यसमाज के विस्तार का आयाम

एशिया की सबसे बड़ी कालोनी दिल्ली के द्वारका में आर्य समाज मन्दिर के लिए डी.डी.ए. भूमि का आबंटन

समस्त दानदाताओं, आर्यसमाजों, आर्य संस्थाओं एवं सहयोगियों का आभार

द्वारका में बनेगा भव्य आर्य समाज मन्दिर

देववाणी-संस्कृत

मुझे सबका प्यारा बनाओ

वेद-स्वाध्याय

प्रियं मा कृणु देवेषु प्रियं राजसु मा कृणु।
प्रियं सर्वस्य पश्यत उत शूद्र उतार्ये।। - अथर्व० 19/62/1
ऋषिः-**ब्रह्मा।।** देवता-**ब्रह्मणस्पतिः।।** छन्दः-**अनुष्टुप्।।**

शब्दार्थ - हे प्रभो! **मा** = मुझे **देवेषु** = देवों में (ब्राह्मणों में) **प्रियं कृणु** = प्यारा करो **मा** = मुझे **राजसु** = राजाओं में (क्षत्रियों में) **प्रियं कृणु** = प्यारा करो, **सर्वस्य पश्यतः** = सब देखनेवालों का भी **प्रियम्** = प्यारा करो, **उत शूद्रे** = शूद्र में भी और **उत आर्ये**=आर्य में भी, सबमें, मुझे प्यारा बनाओ।

विनय-हे मेरे प्यारे प्रभो! तुम मुझे सबका प्यारा बनाओ। मै। यदि सचमुच तुम्हारा प्यारा बनना चाहता हूँ तो मुझे तुम्हारे इस सब जगत् का प्यारा बनना चाहिए। तुम तो इस जगत् में सर्वत्र हो, छोटे-बड़े, ऊँचे-नीचे सभी प्राणियों में मन्दिर बनाकर बसे हुए हो। यदि इन रूपों में मैं तुमसे प्यार न कर सकूँ तो मैं तुम्हें प्यारा कहके क्योंकर पुकार सकूँ? ये सांसारिक लोग बेशक अपने से बड़ों, बलवानों, धनवानों और प्रतिष्ठावालों के ही प्यारे बनना चाहते हैं, अपने से छोटों, गरीबों, दलितों और असहायों के प्यारे बनने की कोई आवश्यकता नहीं समझते। ये बेशक अपने राजाओं और स्वामियों का प्रेम पाना चाहते हैं, किन्तु अपनी प्रजा और नौकरों का प्रेम पाने की कभी इच्छा नहीं करते, परन्तु इसी में तो तुम्हारे सच्चे प्रेमी होने की परीक्षा होती है, क्योंकि इन गरीबों, पीड़ितों असहायों का प्रेम चाहना ही असल में तुमसे प्रेम करना है। बलियों, धनियों और राजाओं से प्रेम की इच्छा करना तो सांसारिक बल से, सांसारिक धन से, सांसारिक प्रभुत्व से प्रेम करना है, तुमसे प्रेम करना नहीं है। इसलिए मुझे तो तुम जहाँ देवों और राजाओं का प्यारा बनाओ, वहाँ इन सब देखनेवाले सामान्य लोगों का तथा नौकरों और सेवकों का भी प्यारा बनाओ। जहाँ ब्राह्मणों और क्षत्रियों का प्यारा बनाओ वहाँ इस सामान्य प्रजाओं (वैश्यों) और शूद्रों का भी प्यारा बनाओ। शूद्रों और आर्यों का, नीचों और ऊँचों का, शिष्यों और गुरुओं का, सेवकों और स्वामियों का, अधीनों और अधिकारियों का, सब छोटों और बड़ों का मुझे प्यारा बनाओ। मुझे ऐसा बनाओ कि इस संसार में जो कोई मुझे देखे, मेरे सम्पर्क में आये, वह मुझसे प्यार करे। हे प्रभो! मैं तो तुम्हारे इस सब संसार से प्रेम की भिक्षा माँगता हूँ, क्योंकि मैं देखता हूँ कि जबतक मैं तुम्हारे इस छोटे-बड़े समस्त संसार से प्रेम नहीं करूँगा तबतक, हे मेरे प्यारे! मैं कभी तुम्हारे प्रेम का भाजन न हो सकूँगा, तुम्हारे प्रेम का अधिकारी न बन सकूँगा।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

140वें निर्वाण दिवस पर कोटि-कोटि नमन

प्रेम और करुणा की प्रतिमूर्ति महर्षि दयानन्द का लोकोपकारी जीवन

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस के दो वर्षीय आयोजनों के बीच उनका 140वां निर्वाण दिवस हम सब आर्यजनों के लिए विशेष रूप से उनके अधूरे कार्यों और सपनों को पूर्णता की ओर आगे बढ़ाने का संकल्प लेने का अवसर है। इस दिन हम सब आर्यजन उन्हें शत-शत नमन करते हैं, अपने श्रद्धा सुमन अर्पण करते हैं, उनके विशाल-विराट बहुआयामी व्यक्तित्व से प्रेरणा प्राप्त करते हैं, राष्ट्र और मानव सेवा का संकल्प धारण करते हैं, उनके बताए सत्य के मार्ग पर चलने का पूरा प्रयास करते हैं, संपूर्ण विश्व को आर्य बनाने के लिए समर्पित होने का व्रत लेते हैं, यज्ञ-योग- स्वाध्याय, सेवा, सत्संग, साधना के व्रतों के नियमित पालन की प्रतिज्ञा करते हैं। ऋषि ने मानवजाति के ऊपर जो अनगिनत उपकार किए, उन्हें सहर्ष स्मरण करते हैं, हमारा प्यारा ऋषि, सबसे न्यारा ऋषि, प्रेम और करुणा की प्रतिमूर्ति ऋषि, जिसने संपूर्ण विश्व को असत्य से सत्य की ओर, अंधेरे से प्रकाश की ओर, मृत्यु से अमृत की चलने का रास्ता दिखाया, लोकोपकारी महान कार्यों को करने के लिए कठिन तप त्याग-साधना की, ऐसे ऋषिवर का न समझ लोगों ने बार-बार अपमान किया, उनके विरुद्ध अनेकानेक षड़यंत्र रचे, ईट और पत्थर मारे, प्राण घातक प्रहार किए, उन्हें विषपान तक कराया, किन्तु गौरव इस बात का होता है कि सत्य और न्याय के पथ पर चलने वाले विष पीकर भी मानव समाज को अमृत पिलाने वाले, अपने जीवन का पल-पल मानवता को जीवंत करने के लिए समर्पित करने वाले ऋषिवर के हम अनुयाई हैं, एक ऐसे ऋषि के अनुयाई हैं जो कहता है कि विरोध की आंच से सत्य की कांति चौगुना चमकती है, दयानन्द को यदि कोई तोप के मुंह के आगे रखकर भी पूछेगा कि सत्य क्या है? तब भी उसके मुंह से से वेद की श्रुति ही निकलेगी। ऐसे सत्य पर दृढ़ संकल्पित ऋषि दयानन्द का अनुयाई होना सबसे बड़े गौरव की बात है।

सत्य और न्याय की प्रतिष्ठा के लिए अडिग ऋषिवर का अविराम संघर्ष जीवनभर चलता रहा। ईश्वर विश्वासी, राष्ट्रभक्त, मानवता के हितैषी महापुरुष को अज्ञान-अविद्या रूपी अंधकार के तिरोहण में कितना कुछ सहना पडता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने गुरु विरजानंद जी के चरणों में केवल 3 वर्ष (1860 से 1863 तक) विद्या अभ्यास किया और वे देश विदेश में प्रचलित मत-मतान्तरों के विरुद्ध रणक्षेत्र में उतर गए। केवल 19 वर्ष में उन्होंने अपने अथक परिश्रम, पुरुषार्थ और तपोबल से सभी मत-मतान्तरों को वेदार्ष की सत्य विद्या के विषय में सोचने पर मजबूर कर दिया। महर्षि का एक ही निश्चय विचार था कि जितने भी मत-पंथ देश और दुनिया में फैलें हैं वे सब वेद ज्ञान के सत्य सिद्धान्तों के लुप्त होने के कारण ही विस्तार को प्राप्त हुए हैं, इसीलिए ऋषिवर ने वेदों के पुनरुद्धार हेतु वैदिक धर्म की पुनः स्थापना के लिए आर्य समाज की स्थापना की। अतः हम सब आर्यों को महर्षि के बताए वेद पथ पर चलते हुए आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार और विस्तार का संकल्प लेकर उनके सन्देश को सार्थक बनाना चाहिए।

वैदिक सिद्धान्तों, मान्यताओं और श्रेष्ठ परंपराओं को स्थापति करने के लिए ऋषिवर ने विधर्मियों के साथ अनेक शास्त्रार्थो में विजय प्राप्त करते हुए मानव मात्र को वैदिक धर्म के ध्वज तले आने का निमंत्रण दिया। उस समय यह कार्य पहाड़ को समुद्र तैराने के समान था या ऐसा कहें कि तलवार की धार पर चलना था। पूरा जमाना ऋषिवर का विरोधी बन गया। समूचे विपरीत वातावरण को अनुकूल बनाकर ऋषिवर ने मानवता पर उपकार किया। काशी में मुस्लिम मत के खण्डन से क्रोधित होकर वहां के कुछ मुसलमान बाहुबलियों ने स्वामी जी को समाप्त करने का षड्यन्त्र किया। एक दिन स्वामी दयानन्द गंगा के किनारे ध्यानस्थ पद्मासन पर बैठे थे। थोडी देर में उधर से कुछ मुसलमान गुंडे स्वामी जी के पास आये और उनमें से दो गुण्डों ने स्वामी जी के कंधों को पकड़कर गंगा में डुबाने के लिए उठाकर ले जाने लगे। स्वामी जी तो सामर्थ्यवान बली थे, उन्होंने अपने बाहुओं से दोनों यवनों को ऐसे भींचना शुरू किया कि उनका दम घुटने लगा, वे या अल्लाह-या अल्लाह कहकर चिल्लाने लगे। ऋषिवर दोनों को लेकर गंगा के पानी में कूद पड़े और नीचे तक डुबाते चले गये, स्वामी जी कुंभक प्राणयाम के द्वारा पांच मिनट तक भी जल में रह सकते थे। जब गुण्डे छटपटाने लगे तो उन्हें दया आ गयी और वे उन्हें पानी की सतह पर ले आये और कहने लगे हमें

- शेष पृष्ठ 7 पर

सत्य और न्याय की प्रतिष्ठा के लिए अडिग ऋषिवर का अविराम संघर्ष जीवनभर चलता रहा। ईश्वर विश्वासी, राष्ट्रभक्त, मानवता के हितैषी महापुरुष को अज्ञान-अविद्या रूपी अंधकार के तिरोहण में कितना कुछ सहना पडता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने गुरु विरजानंद जी के चरणों में केवल 3 वर्ष (1860 से 1863 तक) विद्या अभ्यास किया और वे देश विदेश में प्रचलित मत-मतान्तरों के विरुद्ध रणक्षेत्र में उतर गए। केवल 19 वर्ष में उन्होंने अपने अथक परिश्रम, पुरुषार्थ और तपोबल से सभी मत-मतान्तरों को वेदार्ष की सत्य विद्या के विषय में सोचने पर मजबूर कर दिया। महर्षि का एक ही निश्चय विचार था कि जितने भी मत-पंथ देश और दुनिया में फैलें हैं वे सब वेद ज्ञान के सत्य सिद्धान्तों के लुप्त होने के कारण ही विस्तार को प्राप्त हुए हैं, इसीलिए ऋषिवर ने वेदों के पुनरुद्धार हेतु वैदिक धर्म की पुनः स्थापना के लिए आर्य समाज की स्थापना की। अतः हम सब आर्यों को महर्षि के बताए वेद पथ पर चलते हुए आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार और विस्तार का संकल्प लेकर उनके सन्देश को सार्थक बनाना चाहिए।

साप्ताहिक स्वाध्याय

खाण्डव वन

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित जीवनी महर्षि दयानन्द से क्रमशः साभार

बहुत पहले ऐतिहासिक काल से पहले, वेद और प्रधानतया वैदिक साहित्य केवल भारत की सीमाओं में परिमित हो चुका था। जो लोग ईरान में बसे या ग्रीस में पहुंचे वे भारतीय आर्यों के बन्धु थे, परन्तु यह विषय यथार्थ इतिहास का होते हुए भी कल्पनात्मक है। .... भारत के धार्मिक परिवर्तनों पर ये चारों आक्रमण बड़ा गहरा असर उत्पन्न करते रहे हैं, परन्तु इसका यह अभिप्राय न समझना चाहिये कि केवल बाहर के प्रभाव ही भारत के धार्मिक विचारों को हिलाते रहे हैं। समय-समय पर आवश्यकता होने पर आन्तरिक प्रतिक्रिया भी उत्पन्न होती रही है। जाति की जरूरत के अनुसार बदले हुए वायुमण्डल के साथ अनुकूलता पैदा करने के लिए या बिगड़े हुए ढांचे को सुधारने के लिए ऐसे सुधारक पैदा होते रहे हैं जो बिगड़ी को बनाने का यत्न करते रहे हैं। यदि भारतवर्ष के धार्मिक परिवर्तनों का इतिहास देश जाए, तो हमें ज्ञात होगा कि उसमें आंतरिक प्रतिक्रिया और बाह्य आक्रमण-दोनों का ही प्रभाव है।

प्रकाशक : आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट,
सह प्रकाशक - दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.)
पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑनलाइन www.vedicprakashan.com पर
अथवा 9540040339 पर आर्डर करें

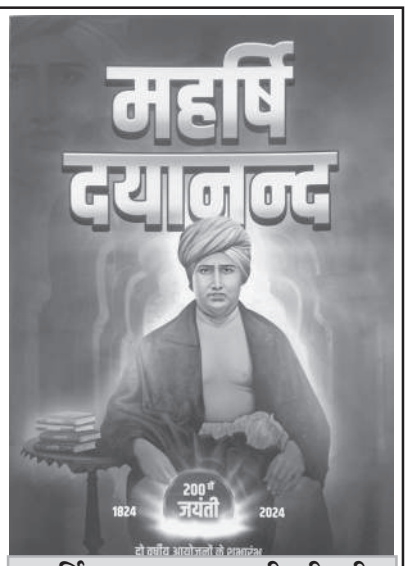

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती पर प्रकाशित

जिस समय गुरु से आशीर्वाद लेकर महर्षि दयानन्द ने कार्य-क्षेत्र में पांव धरा, आर्यजाति की दशा उस समय मुक्त कण्ठ से चिल्ला-चिल्लाकर कह रही थी कि मुझे एक वैद्य की आवश्यकता है। भारत देश अज्ञान, पराधीनता, शत्रु और दुःखों के कारण सर्पों और कांटेदार झाड़ियों से भरे हुए खाण्डव वन के समान दुर्गम और बीहड़ हो रहा था। उसे आवश्यकता थी एक अर्जुन की, जो एक ओर अरणियों की रगड़ से आग निकालकर दावानल को प्रज्वलित करे और दूसरी ओर आग बुझाने का यत्न करने वाले देवों और असुरों के आक्रमणों का उत्तर दे सके। आर्यजाति की दुर्दशा उस समय एक सुधारक को बुला रही थी, एक ऐसे परखैय्ये को बुला रही थी जो उसके पीड़ित अंगों पर शान्ति देनेवाला हाथ रख सके। इस परिच्छेद में हम देखेंगे कि उस दुर्दशा का क्या इतिहास और क्या स्वरूप था। अगला सम्पूर्ण भाग, महर्षि दयानन्द ने उस दुर्दशा को सुधारने का जो यत्न किया, उसके अर्पण किया जाएगा।

बहुत पहले ऐतिहासिक काल से पहले, वेद और प्रधानतया वैदिक साहित्य केवल भारत की सीमाओं में परिमित हो चुका था। जो लोग ईरान में बसे या ग्रीस में पहुंचे वे भारतीय आर्यों के बन्धु थे, परन्तु यह विषय यथार्थ इतिहास का होते हुए भी कल्पनात्मक है। जिस समय इतिहास के प्रकाश में दुनिया अपना मुंह उघाड़ती है, भारतवर्ष का धर्म और सामाजिक संगठन अन्य सब देशों से भिन्न ही मिलता है। ऐतिहासिक काल से पूर्व भारतवर्ष एक अलग इकाई बन चुका था। यही कारण है कि इतिहास हमें भारतवर्ष के धर्मिक और सामाजिक परिवर्तनों का जितना ब्यौरा सुनाता है, वह देश की सीमाओं से परिमित है। भारत के धर्मिक परिवर्तनों का प्रभाव सीमाओं से बाहर बहुत ही कम पड़ता है, और बाहर के धार्मिक परिवर्तनों का प्रभाव भारत पर तभी पड़ता है जब उन धर्मों के अनुयायी लोग विजेताओं के रूप में देश में आ जाते हैं।

भारत का धन, उसका विस्तार और उसकी अन्दरूनी भिन्नता आदि सब बातें बाहर के विजेताओं को खींचती रही हैं। समय-समय पर बाहर की लड़ाकू जातियां सस्ता शिकार मारने के लिए इस स्वर्णदेश पर छापा मारती रही हैं। भारत पर मुख्य-मुख्य धावे 4 श्रेणियों में बांटे जा सकते हैं। पहला धावा सिकन्दर का था। दूसरा धावा उत्तर की अनेक जातियों का था, जो सदियों तक जारी रहा। कभी हूण, कभी सीथियन और कभी पारसीक लोग भारत को जीतने का यत्न करते रहे। तीसरा धावा इस्लाम का हुआ, जो पहले के धावों से जबरदस्त, सबसे अधिक स्थायी और सबसे भारी असर उत्पन्न करने वाला हुआ। चौथा धावा यूरोपियन जातियों का है, जो यद्यपि बहुत पुराना नहीं है तो भी बड़ा गहरा है, बड़ा जबरदस्त है और इस्लाम से भी भयंकर है।

भारत के धार्मिक परिवर्तनों पर ये चारों आक्रमण बड़ा गहरा असर उत्पन्न करते रहे हैं, परन्तु इसका यह अभिप्राय न समझना चाहिये कि केवल बाहर के प्रभाव ही भारत के धार्मिक विचारों को हिलाते रहे हैं। समय-समय पर आवश्यकता होने पर आन्तरिक प्रतिक्रिया भी उत्पन्न होती रही है। जाति की जरूरत के अनुसार बदले हुए वायुमण्डल के साथ अनुकूलता पैदा करने के लिए या बिगड़े हुए ढांचे को सुधारने के लिए ऐसे सुधारक पैदा होते रहे हैं जो बिगड़ी को बनाने का यत्न करते रहे हैं। यदि भारतवर्ष के धार्मिक परिवर्तनों का इतिहास देश जाए, तो हमें ज्ञात होगा कि उसमें आंतरिक प्रतिक्रिया और बाह्य आक्रमण-दोनों का ही प्रभाव है।

यूनानियों के आक्रमण से पूर्व जो बड़े-बड़े धार्मिक परिवर्तन हुए, वे मुख्यतया आन्तरिक प्रतिक्रिया के ही परिणाम थे। ब्राह्मण-ग्रन्थों के यागप्रधान धर्म के विरुद्ध उपनिषदों के ज्ञानवाद की प्रतिक्रिया हुई। फिर वही विकार उत्पन्न होने पर बौद्ध धर्म प्रतिक्रिया के रूप में उत्पन्न हुआ। *-क्रमशः*

स्वास्थ्य चर्चा

सर्दी में कैसे रहें स्वस्थ?

सर्दी में जुकाम के प्रति ज्यादातर लोग लापरवाही बरतते हैं जो कि ठीक बात नहीं है। जुकाम के प्रति लापहवाही अक्सर गंभीर रुख धारण कर लिया करती है। यह जुकाम से पीड़ित व्यक्ति के खांसने और छींकने के द्वारा एक से दूसरे व्यक्ति में फैलता चला जाता है। जब-जब मौसम परिवर्तित होने पर शरीर के जो हिस्से सबसे ज्यादा प्रभावित होते हैं वह नाक, कान और गला है। मौसम परिवर्तन के वक्त आपने देखा होगा कि उस वक्त हर दूसरा तीसरा व्यक्ति जुकाम से पीड़ित हुआ होता है। जैसे ही व्यक्ति को जुकाम होता है वैसे ही बड़ी तेजी से उसकी नाक बहने लगती है और उसे बार-बार छींके आने लगती हैं और अनेक लोग ऐसे भी होते हैं जिन्हें साल में कई-कई बार जुकाम सताया करता है।

जुकाम एक तरह का वायरल इन्फैक्शन होता है। अब तक जुकाम के वायरसों की 200 प्रजातियों का पता लगाया जा चुका है। अमूमन सभी प्रजातियों का प्रकोप एक तरह का ही होता है। अपने साथ रहने वालों, एक बेड पर साथ सोने वालों, ऑफिस, घर, फैक्ट्री, हास्टल आदि में साथ रहने वालों मेले या भीड़ भाड़ की जगह में जाने वालों में यह रोग जल्दी-जल्दी होता है। किसी भी वजह से शरीर की इम्यूनिटी पॉवर (रोग प्रतिरोधक ताकत) कम हो गयी हो, अचानक ठण्ड लगने पर या फिर नाक की श्लेष्मकता पहले से ही धूल-धुआं आदि से प्रभावित हो तो ऐसे में यह रोग बड़ी सरलता से पनपता है। समय रहते अगर जुकाम का उपचार कर लिया जाये तो तीन-चार दिनों में ही यह ठीक हो जाता है। कई लोगों का पुराना जुकाम तो पीनस या नजले में परिवर्तित हो जाता है। ऐसे में इन लोगों को बहुत ही कष्ट का अनुभव होता है अगर जुकाम बिगड़ जाये तो इसका परिणाम बहुत घातक होता है। जुकाम में खांसी और फिर टी.बी. होने के बारे में तो लगभग सभी को पता है।

लक्षण : रोग की शुरूआत में रोगी को अपने नाक बंद सी महसूस होती है। नाक में कुछ जलन होने लगती है, गला कुछ सूखा हुआ सा और दुखता हुआ सा लगता है, जिससे उसको मुंह से सांस लेनी पड़ती है।

- रोगी की नाक में खुजली होने लगती है, छींके आने लगती हैं, सिर में दर्द रहने लगता है और नाक से पतला कृाव गाढ़ा हो जाया करता है। तब नाक में पानी आने के बाद रोगी की छींके आनी बंद हो जाया करती है।
- रोगी का सारा शरीर दुखने लगता है और उसे भारीपन से महसूस होने लगता है।
- रोगी की नाक से गरम-गरम हवा निकलने लगती है। कभी-कभी रोगी को बुखार भी हो जाया करता है।

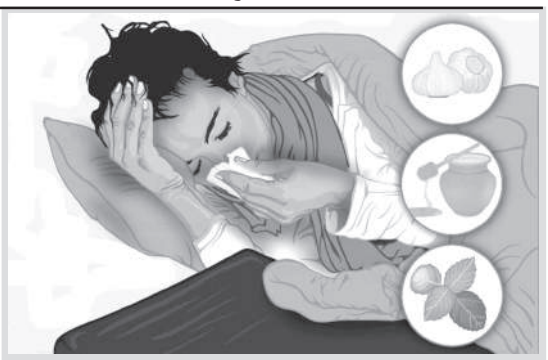

जुकाम एक तरह का वायरल इन्फैक्शन होता है। अब तक जुकाम के वायरसों की 200 प्रजातियों का पता लगाया जा चुका है। अमूमन सभी प्रजातियों का प्रकोप एक तरह का ही होता है। अपने साथ रहने वालों, एक बेड पर साथ सोने वालों, ऑफिस, घर, फैक्ट्री, हास्टल आदि में साथ रहने वालों मेले या भीड़ भाड़ की जगह में जाने वालों में यह रोग जल्दी-जल्दी होता है।

- रोगी को भूख कम लगती है।
- रोगी बेचैन सा रहने लगता है और उसे नींद भी कम आती है।
- जुकाम के रोगी को गंध का अहसास कम ही होता है।
- रोगी को सूखी खांसी होती है और उसकी आवाज बैठ सी जाती है।

निवारण : जुकाम ठीक करने की कोई औषधि एलोपैथी में नहीं है।

- शेष पृष्ठ 7 पर

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती के अवसर पर

आर्ष गुरुकुल यज्ञ तीर्थ एटा की हीरक जयन्ती समारोह पूर्वक सम्पन्न

यज्ञ सम्मेलन ★ आर्य महिला सम्मेलन ★ संस्कृत एवं संस्कृति सम्मेलन ★ वेद सम्मेलन ★ गुरुकुल शिक्षा एवं स्नातक सम्मेलन ★ राष्ट्र रक्षा ★ योग एवं व्यायाम प्रदर्शन के माध्यम से मानव सेवा एवं राष्ट्र निर्माण पर हुआ चिन्तन-मंथन

गुरुकुल शिक्षा पद्धति की पुनर्स्थापना महर्षि की देन – सुरेशचन्द्र आर्य

आर्यसमाज के प्रचार को सम्पूर्ण विश्व में फैलाएं गुरुकुल के स्नातक – सुरेन्द्र कुमार आर्य

वैदिक संस्कृति के प्राण हैं गुरुकुल – धर्मपाल आर्य

हमारे महापुरुषों ने गुरुकुलीय शिक्षा व्यवस्था में शिक्षा प्राप्त करके ही वेदादि शास्त्रों का गहन अध्ययन कर मानव मात्र को कल्याण की राह दिखाई थी, 19 वीं सदी के महामानव हमारे गुरु दयानंद ने जिनकी 200वीं जयंती सम्पूर्ण आर्य समाज पूरी निष्ठा से मना रहा है एक ओर मानवजाति का आह्वान किया था कि "आओ लोट चलें वेदों की ओर" वहीं भारत के उज्ज्वल भविष्य के निर्माण हेतु प्राचीन गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली को अपनाने का भी सन्देश दिया था, आर्य समाज द्वारा गुरुकुल, कन्या गुरुकुलों की श्रृंखला प्रारंभ हो गयी। गुरुकुलों के इस बड़े क्रम में 'आर्ष गुरुकुल यज्ञ तीर्थ एटा, की स्थापना 75 वर्ष पूर्व आर्य समाज के महान संन्यासी श्री ब्रह्मानंद दंडी जी ने की थी। उनके कुशल निर्देशन में अनेक ब्रह्मचारियों ने कठोर तप करके देश-विदेश में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के मिशन और आर्य समाज के सेवा कार्यों निरंतर आगे बढ़ाकर अनेक महान कीर्तिमान

हीरक जयन्ती समारोह को सम्बोधित करते सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य, जे.बी.एम. ग्रुप ऑफ कम्पनीज के चेयरमैन श्री सुरेन्द्र कुमार आय एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी। अवसर पर गुरुकुल के वर्तमान ब्रह्मचारियों के साथ गुरुकुल एवं विभिन्न सभाओं-संस्थाओं के अधिकारी एवं उपस्थित जन समूह

– शेष पृष्ठ 6 पर

विशाल शोभायात्रा के दौरान महर्षि के बुलन्दशहर प्रवास के स्मृति स्थलों को देखकर अभिभूत हुए आर्यजन

उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर जिले में महर्षि दयानंद सरस्वती ने काफी समय व्यतीत किया था। इस जिले में गाँव दर गांव में उनकी याद में अनेकों स्मृति स्थल आज भी मौजूद हैं। चंडोक गाँव का वह मकान है जिसमें ऋषि दयानंद ठहरे और उनके कई दिन यहीं उपदेश हुए। आर्यजनों ने स्मृति स्थलों का दौरा कर जाना कि आज भी कैसे महर्षि दयानन्द जी की स्मृति में लोगों ने संजोकर रखी है जहाँ-जहाँ स्वामी जी पग पड़े। वहां-वहां आज भी उनको श्रद्धापूर्वक स्मरण किया जाता है। दरावर गांव का वो कुआँ भी देखा, जहाँ महर्षि जी स्नान किया करते थे। इन स्मृतियों को देखकर मन अगाध श्रद्धा से भर आया कि महर्षि दयानन्द जी कैसे अल्प साधनों के चलते उस काल में गाँव दर गाँव वैदिक ध्वज फहराकर क्रांति की मशाल जला गये। यात्रा के दौरान आहार गांव (ताहरपुर)बुलंदशहर के वनखंडेश्वर महादेव के मंदिर भी जाना हुआ जहां महर्षि दयानंद जी कई दिन ठहरे और इस मंदिर के अंदर बने भूमिगत साधना कक्ष में साधना भी की।

बुलंदशहर में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से जुड़े अनेकों स्मृति स्थलों का दौरा करते हुए गांव आहार में श्री अरविन्द

– शेष पृष्ठ 7 पर

दरावर गांव का कुआँ जहाँ महर्षि स्नान करते थे।

वनखंडेश्वर महादेव मंदिर जहां महर्षि दयानंद कई दिन ठहरे और साधना की।

चांसी का वह वटवृक्ष जिसके नीचे कुटिया में महर्षि रहकर साधना करते थे

बुलन्दशहर का गांव आहार का वह घर जिसमें महर्षि दयानन्द कुछ दिन रहे

200वीं जयन्ती के अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में

उदयपुर में स्वाध्याय एवं योग शिविर सम्पन्न

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती तथा 150वें आर्य समाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में, आगामी 2 वर्षों में विभिन्न भव्य आयोजनों की श्रृंखला में कई कार्ययोजनाओं, कार्यशालाओं, शोभा यात्राओं तथा विशेष शिविरों के आयोजन किया जाए रहे हैं। इसी श्रृंखला मेंह्वदिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश स्मारक न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर में स्वाध्याय एवं योग शिविर का आयोजन किया गया। आचार्य भद्रकाम वर्णी जी के सन्निध्य में 19 से 22 अक्टूबर, 2023 तक आयोजित शिविर में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन तथा गौकरुणानिधि के स्वाध्याय के साथ सम्पन्न हुआ।

शिविरार्थियों में आचार्य हरिओम शास्त्री (मंगोल पुरी), श्री राजकुमार आर्य एवं साथी (कृष्णा नगर), श्रीमती मीना आर्य एवं साथी (विकास नगर), संयोजक डॉ मुकेश आर्य 'सुधीर' एवं साथी (शाहाबाद मुहम्मदपुर), श्री देवेन्द्र सचदेवा (रोहिणी) श्री एस. पी. सिंह (महरौली), इत्यादि ने भागीदारी कर धर्म लाभ प्राप्त किया।

सभी सदस्यों ने स्थानीय भ्रमण भी किया। न्यास के प्रधान श्री अशोक आर्य, मन्त्री श्री भवानी दास आर्य तथा प्रबन्धक श्री नवनीत शास्त्री द्वारा शिविर आयोजन की व्यवस्थाओं में विशेष योगदान प्रदान कर सराहनीय कार्य किया।

– आर्य सतीश चड्ढा, अध्यक्ष, स्वाध्याय एवं योग शिविर समिति।

महर्षि दयानन्द की 200वीं जयन्ती पर दिल्ली की विभिन्न सेवा बस्तियों में

सामूहिक एवं पारिवारिक यज्ञों के माध्यम से मनाए जा रहे – पर्व त्यौहार

नवरात्र एवं विजयादशमी (दशहरा) के अवसर पर जनता कैंप, प्रगति मैदान, कीर्ति नगर, शिव विहार, सिग्नेचर ब्रिज कैंप, टाटा मोटर्स इलेक्ट्रॉनिक्स डिपो, दयानंद विहार बस्ती, जवाहर कैंप कीर्तिनगर, यमुना घाट, कैलाशपुरी, गोविन्दपुरी और महर्षि वाल्मीकि जयन्ती पर आर्य नगर, बाल्मीकि बस्ती इत्यादि विभिन्न सेवा बस्तियों में सैकड़ों यज्ञ कराकर निर्धन लोगों के साथ यज्ञ और सत्संग के साथ पर्व मनाए

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150 में स्थापना दिवस को लेकर दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला, जहाँ सम्पूर्ण भारत और विश्व में अत्यंत उत्साहपूर्वक विभिन्न आयोजनों के माध्यम से मनाई जा रही है, वहीं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित विभिन्न सेवा प्रकल्पों में प्रमुख घर घर यज्ञ हर घर यज्ञ योजना के द्वारा दिल्ली एनसीआर में पर्व त्योहारों पर सेवा बस्तियों में लगातार यज्ञों के आयोजन किए जा रहे हैं। इसके पीछे भावना यही है कि सभी लोग अपनी वैदिक संस्कृति के अनुसार पर्व त्यौहार मनाएं और इनके महत्व को भी समझें। इस क्रम में दिल्ली की विभिन्न सेवा बस्तियों शिव विहार, सिग्नेचर ब्रिज, इत्यादि स्थानों पर नवरात्र, दशहरा और बाल्मिकी जयन्ती के अवसर पर विशेष यज्ञों के आयोजन सफलता पूर्वक सम्पन्न हुए।

वर्तमान में घर-घर यज्ञ हर घर यज्ञ के अभियान को आगे बढ़ाते हुए सभा द्वारा विशेष रुप से कई टीम इस महान कार्य को पूरी निष्ठा के साथ कर रही हैं, एक तरह से पूरे क्षेत्र में संसार का सबसे श्रेष्ठ कर्म यज्ञ की एक लहर उत्पन्न हो गई है।

ज्ञात हो कि इस घर-घर यज्ञ घर-घर यज्ञ को जन जन तक पहुंचाने के लिए सभा के कार्यकर्ताओं की टीम पूरे साजो-सामान के साथ हर जगह पर यज्ञ करने के लिए पहुंचते हैं, सामग्री, यज्ञ पात्र, माइक, दरियां इत्यादि सारी व्यवस्था अपने साथ लेकर जाती हैं और सभी लोगों को यज्ञ के वैज्ञानिक और आध्यात्मिक स्वरूप को बता कर उनमें यज्ञ के प्रति लगाव पैदा करते हैं, परिणाम स्वरूप सैकड़ों की संख्या में स्त्री पुरुष और बच्चे यज्ञ में भाग लेते हैं आहुति देते हैं स्वाहा स्वाहा करते हैं और गायत्री मंत्र का उच्चारण भी करते हैं कुछ जगहों पर माताएं बहने लोकगीत और भजन भी गाती हैं। इसके साथ साथ अपने घरों में यज्ञ करने के लिए भी अनुरोध करते हैं अपने बच्चों के जन्मदिन पर विवाह की वर्षगांठ पर और अनेक अन्य शुभ अवसर पर यज्ञ करने के लिए संकल्पित भी होते हैं और दूसरे स्थानों पर यज्ञ कराने के लिए भी प्रयास करते हैं। इस तरह से यज्ञ हर घर में और घर घर में लगातार पहुंच रहा है। यहां प्रस्तुत है अभी हाल ही में कुछ स्थानों पर किए गए यज्ञों के चित्र एवं झांकियां।

Initial Stage of Reform (From 1863-1866 A.D)

Continue From Last Issue

It was very strange for Swami Dayanand. When God is imageless, how can his shadow fall on Maya! Daya Nand had studied (learnt) from Vedas that God is imageless 'Akayamvranamasnaviram' So how can his shadow fall on Maya? Brahm and Ishwar were the names of Almighty God. He was astonished to read from Panchdashi. Then he declared Panchdesti and other books of Advaitism as 'Not to be Read'.

The writers of swamiji's biography have written that for 3 years Swamiji continued condemning Vaishnav religion and preaching for 'Shaiv religion'. At that (and even at present) there was great effect of Vaishnav religion in Mathura and nearby places. Mathura is the city of Shri Krishna. It is a strong field of Vaishnavs. While staying at Mathura Swamiji observed wrong tradition spread in the name of Shri Krishna. He also had chance to know about the religions started by Ramanuj and Vallabh. He also noticed how much the writer of Bhagwat had described Shri Krishna's character as bad character. So, he was greatly pinched by those feelings. 'Shri Krishan Leelas' described in Bhagwat inspired him to condemn Vaishnav religion.

From Agra SwamiJi reached Gwaliar staying at Dhaulpur on the way for some time. Sindhiya had managed for Bhagwat Katha there. Coming to know that some wise Sadhu had reached there, the King invited him also to attend the Katha, Swamiij sent message to the king, people would get nothing but pain (sorrow) from Katha. If you want relief, listen to 'Gayatri Mantra' and repeat yourself also. The King just smiled at his message. Bhagvat Katha was started. Swamiji started condemning bhagwat in his speeches in Sanskrit. Swamiji passed some days in speeches and travelling them reached Jaipur and stayed there for 4 months. He organised Katha (stories) of Upnishads and condemned Idol worship. He also published an Advertisement condemning Bhagwat. It was written there that Vyas Dev was not writer fo Bhagwat. It was written by Pandit Bope Dev who had show Good charactered Shai Krishna as a man of bad character. Swamiji participated in Pushkar Mela and condemned Ramanuj-religion. Thus he condemned Idol worship and bad customs prevailing in the society. The first sect (religion) was Vaishnav that was condemned by swamiji. It seems that in the beginning period while condemning Vaishnav religion, Swamiji favoured Shaiv religion sometimes. Two points are to be kept in mind. Firstly Swamiji had not planned completely the improvement program, it was being pIanned. Secondly, he used to say Shiv is the name of Ishwar, I don't "recognise and consider Shiv as husband of Parvati".

Swamiji had made up his mind strongly for 'safety of cows', since his early life. He reached Ajmer in the month of May, 1866 and stayed with his relative, Bansi Lal. He met Major A. G. Davidson the commissioner and Colonel (Kernal) Brook, the Assistant to commissioner and talked about safety of cows. Swamiji pleaded that safety of cows is benefitial for both the King and the society. After all govt. officers are govt. officers! Assistant Commissioned gave Swamiji a lettes and asked him to see 'laat Sahib' (the Governor). He assured Swamiji that the governor would surely discuss your topic after reading the letter. Swamiji accepted indirect sweet 'NO' of the officer. This is the proof of Swamiji's purity of heart and simple nature.

Since very beginning Swamiji used three options for explaining his views. He delivered speeches, challenged for debate and published Advertisements. He delivered speeches every where. He prepared written advertisements in Jaipur and some other places. First of all he challenged Vaishnav Pandits for debate in Gwaliar about Bhagwat, But all the Pandits escaped away, No one accepted the challenged. Then he participated in debate with a group of Vyas Bakshi Ram and other Pandits in Jaipur in the presence of Maharaj of Jaipur. The Pandits could not face Swamiji and became speech less. There was a series of debates in Pushkar. He stayed there for long in the temple of Brahmaji. He had debates with Pandits, Brahmans and Sanynsis. Once many Pandits tried to attack Swamiji with sticks. Swamiji alone could face and defeat all, but some one reached their for his help. He was the priest of the temple. He made all the Pandits run away.

To be Continue.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

हे गुरुवर, ऋषि देव दयानन्द !.....

पाखंड, आडंबर, पीर-पैग़म्बर, गुरु, संत महाराज आदि अन्यों को आपने तर्क, प्रमाण, युक्ति, शास्त्रार्थ, उपयोगी चिन्तन आदि से परास्त कर 'सत्यमेव जयते' को अमर रखा। आपका संकल्प था **'सत्यं वदिष्यामि।'** इस सत्य के पालन व आचरण के कारण कितनी बार हलाहल विष, पत्थर खाए, अपमान सहा, भूखे रहे, सचमुच आप आजीवन विषपायी थे। संसार की दुर्गति, अज्ञानता व जडता पर रातों रात जागकर आँसू बहाते रहे। आपकी तुलना में अन्य महापुरुष फीके, हल्के तथा सामान्य हो जाते हैं। सारे जीवन में कभी भी, कहीं भी न कोई चारित्रिक दुर्बलता और न ही अर्थ लोभ को पास आने दिया। तुम्हारे कहर विरोधी और आलोचक भी अंदर से प्रशंसक रहे। आपके नश्वर शरीर छोड़ने पर दुख वियोग में इतने शोक पत्र आए कि देखने वाले भी चकित हो गए थे। ऐसा दिव्य गुणों वाला महापुरुष जिस राष्ट्र, समाज, संस्था, संगठन तथा व्यक्ति को मिला हो वह निश्चय ही धन्य और महान होना चाहिए। सत्य है कि हम भारतीयों ने उस यतिवर योगी का मूल्यांकन नहीं किया? जिसने हमें सार्थक और उद्देश्यपूर्ण जीना सिखाया और सुख एवं शांतिपूर्वक मरना भी सिखाया।

आर्य समाज स्वामी दयानंद जी का लगाया हुआ बग़ीचा है। इस बाग को पल्लवित व पुष्पित करने के लिए उन्होंने सारा जीवन विरोध, संघर्ष और कठिनाइयों का सामना किया। इसकी मान्यताएं, सिद्धान्त, आदर्श तथा जीवन दर्शन बहुजन हिताय तथा बहुजनसुखाय है। आर्य समाज वैदिक धर्म का प्रचारक-प्रसारक और उद्धारक है, वेद ईश्वरीय ज्ञान है, वदे सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद परमात्मा का आदेश, उपदेश और संदेश है। वेद सबके हैं, सबके लिए हैं तथा सबको वेद पढ़ने का अधिकार है। आपने नारी जाति की वकालत करके उन्हें पुन: मातृशक्ति के पद पर प्रतिष्ठित किया। आपने संसार को जीवन जगत का सीधा सच्चा एवं सरल मार्ग बताया और दिखाया। आपके चिन्तन में व्यवहारिकता, शास्त्र प्रमाण, उपयोगिता और तर्कयुक्ति है। लोगों को इन्हीं विशेषताओं के कारण कहना पड़ा कि जहाँ जहाँ आर्य समाज है, वहाँ वहाँ जीवन है। यह सिद्ध और प्रामाणिक है कि सर्वोत्तम विचारधारा का धनी आर्य समाज है। महर्षि की उत्तराधिकारी पीढी ने वैदिक चिन्तनधारा को हम तक पहुंचाया है। उन्हीं का तप, त्याग, साधना, उपकार, बलिदान आदि स्मरणीय है, वन्दनीय और उल्लेखनीय है। उनके जीवन प्रेरणास्रोत हैं। उनका ऋषि परम्परा के प्रति जुनून, पागलपन, दीवानापन व दर्द अकथनीय और अतुलनीय है। को सारी जिन्दगी पत्थर, ज़हर, खाता-पीता रहा, तो को लहुलुहान होकर स्टेशनों पर मुसाफ़िर की जिन्दगी जीता रहा, को सर्वस्व लुटाकर सीने में गोलियां झेलता रहा, तो को 10 नियमों का चोगा पहनकर आर्य समाज की रागनी सुनाता रहा।

ऋषिवर! मर्मांतक पीड़ा से लिख रहा हूँ कि आज आपका लगाया हुआ आर्य समाज रूपी बगीचा सूख तथा बिखर रहा है। इसलिए बाग की खुशबू, रोनक व आकर्षण क्षीण हो रहा है। अब शीतल, शांत, प्रेरक, सुखद जीवन जगत को बदलने की ठंडी हवाएँ नहीं आ रही हैं। सर्वत्र मूल में भूल हो रही है। रक्षक ही भक्षक बन रहे हैं। जो लड़ा हमें अज्ञान, ढोंग, पाखंड, अंधविश्वास, जड़ पूजा, गुरुडम आदि से लडनी चाहिए थी, वह शक्ति, समय, सामर्थ्य, सोच आदि आपस के पद प्रतिष्ठा, स्वार्थ के विवादों में लग रही है। आज का आर्य समाज बाहर की दृष्टि, भौतिक दृष्टि तथा शरीर की दृष्टि से चाहे लंबा-चौड़ा तथा फैला नज़र आता हो, किन्तु प्रभाव, अनुयाइयों, प्रचार-विचार, निर्माणात्मक, विचारात्मक आदि की दृष्टि से सिकुड़ता जा रहा है। ये हम सब के लिए अत्यंत विचारणीय, चिन्तनीय, करणीय है। आर्य समाज की चारित्रिक गरिमा की साख, पहिचान और विश्वसनीयता में गिरावट आ रही है। जो संस्थाओं, संगठनों, सभाओं, आर्य समाज के अधिकारियों और सदस्यों, विद्वानों, प्रचारकों आदि में आकर्षण व विशेषताएँ दिखा देनी चाहिए, उसका तेज़ी से अभाव हो रहा है। आर्य समाज में तेज़ी से धार्मिकता, आध्यात्मिकता, प्रभुभक्ति, स्वाध्याय, सत्संग आदि की प्रवृत्ति कम हो रही है। हमारी करनी और कथनी में विरोध आ रहा है। सब बातों पर हम सबको तुरंत गंभीरता से, रचनात्मक दृष्टि से चिन्तन-मनन करना चाहिए। आर्य समाज के सभी जन, उठो, जागो अपने स्वरूप को पहचानो। मानदारी से ऋषिवर के मिशन के लिए कुछ करने का संकल्प और व्रत लो, बात बन जाएगी।

- बी.जे. 29, शालीमार बाग, दिल्ली

पृष्ठ 5 का शेष

स्थापित किए। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस के आयोजनों के साथ ही 'आर्ष गुरुकुल यज्ञ तीर्थ एटा द्वारा 'हीरक जयंती समारोह 27 से 29 अक्टूबर २०२३ के बीच सम्पन्न हुआ, जिसमें सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य, जेबीएम ग्रुप के चेयरमेन और अखिल भारतीय दयानन्द सेवा श्रम संघ के प्रधान श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य, दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, महामंत्री श्री विनय आर्य, वैदिक विद्वान आचार्य डॉ. वागीश, डॉ. विनय विद्यालंकार एवं अनेकों अन्य आर्य विद्वान, सन्यासी, कार्यकर्ताओं, स्नातकों का अनूठा संगम सफल हुआ। इस अवसर पर चतुर्वेद पारायण यज्ञ किया गया। 160 छात्रों की क्षमता के नए छात्रावास बनाने के लिए आर्ष गुरुकुल ट्रस्ट के प्रधान योगराज अरोड़ा जी ने नींव रखी। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी, धर्मपाल आर्य जी और विनय आर्य जी ने विद्यार्थियों को आशीर्वाद दिया। जेबीएम ग्रुप के चेयरमैन श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी चतुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति दी।

- डॉ. विनय विद्यालंकार, मन्त्री

पृष्ठ 2 का शेष

प्रेम और करुणा की प्रतिमूर्ति महर्षि दयानन्द का लोकोपकारी जीवन

संन्यासी समझकर डुबोने आ गये, हम क्षात्रबल से दुष्टों को सबक सिखाना जानते हैं। यह कहकर आगे से इस प्रकार की दुष्टता न करने की हिदायत देकर उन्हें छोड़ दिया। स्वामी जी ब्रह्मतेज और क्षात्रबल तेज के द्वारा प्रचार के रणक्षेत्र में आये थे।

एक बार अनूप शहर में एक दंभी ब्राह्मण उनके लिए भोजन की थाली लाया, स्वामी जी पहले ही भोजन कर चुके थे, उस थाली में पान रखा हुआ था, जब स्वामी जी उस पान को देख रहे थे तो ब्राह्मण ने सोचा कि अब खैर नहीं यह सोचकर वह उल्टे पाँव भाग खड़ा हुआ। प्रयागराज में एक बार किसी ने मिठाई में विष देने का प्रयत्न किया। काशी में पान में हलाहल देने की चेष्टा की गयी। इस प्रकार उन्हें 17 बार विभिन्न प्रकारों से विष देने का प्रयत्न किया गया, निम्न लिखित स्थानों पर प्राण घातक प्रहार किये गये। मेरठ, दानापुर, कर्णवास, फर्रुखाबाद, सोरों, कानपुर, प्रयाग, रामनगर, काशी, मिर्जापुर, मुंबई आदि नगरों में उनके प्राण हरण की चेष्टाएं की गई। महर्षि दयानन्द सरस्वती प्रचार करते हुए सन् 1868 में कर्णवास पधारे। वहां पाखंड का खण्डन करने पर कर्णसिंह स्वामी से जी अप्रसन्न हो गया और उसने स्वामी जी पर तलवार तान दी। स्वामी जी ने उसे छीनकर जमीन पर टिका कर तोड दी। और कहा यह तलवार कहें तो तुम्हारे शरीर में घुसेड दूं।

वहां पर उपस्थित ठाकुर किशन सिंह ने कर्णसिंह से कहा- यदि तूने अब एक भी अपशब्द स्वामी जी को कहा तो फौजदारी हो जायेगी। कर्णसिंह लज्जित हो वहां से चला गया। एक बार स्वामी जी ध्यानस्थ मुद्रा में बैठे थे, एक विरोधी दल का व्यक्ति तलवार लेकर आया और स्वामी जी पर उसने वार करना चाहा लेकिन स्वामी जी ने जैसे ही आंख खोली और हुंकार भरी तो वह वहां से भाग खड़ा हुआ।

20 अक्तूबर सन् 1873 को स्वामी जी कानुपर पहुंचे, वहां स्वामी जी के व्याख्यान होने वाले थे। वहां का कोतवाल सुल्तान अहमद उनके व्याख्यानों का विरोध कर रहा था फिर भी स्वामी जी के समर्थकों ने उनका उपदेश रखा। इससे चिढ़कर कोतवाल सुल्तान अहमद ने वहां के पौराणिक ब्राह्मणों को उकसाया और उन पर ईट-पत्थर बरसवाये, स्वामी जी को कहीं चोट नहीं पहुंची। इतने में अंग्रेज पुलिस आयी और स्वामी जी के व्याख्यानों को अनुमति दी गयी। मथुरा में पं. देवी प्रसाद डिप्टी कलेक्टर ने स्वामी जी को रोककर कहा कि आप अपना उपदेश दीजिए और पौराणिकों से शास्त्रार्थ कीजिए, स्वामी जी कलेक्टर के कहने पर रुक गये, जब यह बात शहर में पता चली कि स्वामी दयानन्द शास्त्रार्थ करना चाहते हैं। तो चार-पांच सौ चौबे लाठी-डंडे लेकर स्वामी जी को मारने आये। हो-हल्ला और शोर सुनकर ठाकुर भूयाल सिंह रिसालदार घबराकर वहां आये और उस बाग का फाटक बंद कर दिया। स्वामी जी के साथ कुछ क्षत्रिय गण भी स्वामी जी की रक्षार्थ वहां पहुंच गये, उन्हें देखकर चौबे समुदाय को भीतर घुसने का साहस नहीं हुआ। ऐसे अनेकानेक प्राणघातक हमलों का उचित जवाब देते हुए ऋषिवर ने सारी प्रतिकूल परिस्थितियों अनुकूल बनाया तथा

संपूर्ण मानवता की भलाई के लिए वेदज्ञान की अखंड ज्योति प्रज्ज्वलित की। जब राजस्थान के जोधपुर के राजा जसवंत सिंह के दरबार में स्वामी जी ने अचानक पदार्पण किया तभी जोधपुर नरेश नन्ही जान की पालकी को कन्धा देते हुए उन्होंने देख लिया। स्वामी जी अचम्भित हुए और सोचने लगे कि इतनी बडी रियासत का राजा क्षुद्रवैश्या की पालकी को अपना कन्धा देकर उठा रहा है, यह आर्यावर्त के पतन का निकृष्ट प्रसंग है। उन्होंने महाराजा को फटकार लगाते हुए कहा-महाराजा! आप सिंह होकर वैश्या के साथ खेलते हो। बस यह बात नन्ही जान के कलेजे को चीर कर चली गयी।

वहीं उसने फैसला कर लिया कि इस वैरागी को हर हाल में मौत के घाट उतारना है। नन्ही जान ने दरबारी मुसलमानों एवं जागीरदारों से मिलकर रसोइये के द्वारा स्वामी जी के दूध में संख्यिादि विष दे दिया। स्वामी जी को इस विष के कारण दाह, उल्टियां और शरीर पर फुंसिया आनी शुरू हो गयी। अन्ततः 30 अक्तूबर सन 1883 को ठीक दीपावली के दिन स्वामी दयानन्द सरस्वती की आत्मा शरीर को छोडकर अनन्त में विलीन हो गयी। स्वामी जी ने अपनी एक प्राण ज्योति बुझाकर हजारों दीपकों को प्रज्वलित कर संसार को प्रकाशित किया। उनके एक एक रक्त के कण से हजारों अनुयायियों ने स्वामी के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अपना जीवन न्यौछावर कर दिया ।

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी कार्तिक अमावस्या पर देश और दुनिया में दीपावली होगी, घर-घर दीए जलेंगे, रोशनी होगी, मिठाइयां बटेंगी और उपहार भी, बम-पटाखे और फुलझडियां भी चलेंगी, किंतु क्या भय-भ्रम के अंधेरों का तिरोहण अब तक संभव हुआ है या इस बार होगा? बाहर के अंधेरे से अंदर का अंधेरा खतरनाक होता है, बाहर की कृत्रिमता के प्रकाश से भीतर की चांदनी नहीं होती, इसलिए बार-बार दीपावाली आती है, फिर भी अंधेरा नहीं हटता। ऋषिवर का निर्वाण हुए 140 वर्ष हो चुके हैं, उन्होंने सदैव वैदिक ज्ञान के उजाले पर जोर दिया, भय-भ्रम-पाखंड, अंधविश्वास कुरीतियों से समाज को बचाने का महान कार्य किया, उन्होंने मनुष्य को मनुष्य बनने की प्रेरणा दी, यूं तो ऋषि से पूर्व और उनके बाद भी अनेकों महापुरुषों ने भारत तथा विश्व में जन्म लिया, और यह क्रम अनवरत जारी है, लेकिन मनुष्य को पूर्ण मनुष्य बनकर जीना सिखाने वाले, व्यक्ति, परिवार, समाज, देश दुनिया को श्रेष्ठ बनने-बनाने के लिए कृण्वन्तो विश्वमार्यम का उद्घोष करने वाले ऋषि दयानन्द अनोखे, अनूठे और निराले थे। आज समाज में भ्रम का ज्ञान फैलाने वालों की बहुतायत है। अंधेरा फैलाने वालों का तांता है, लेकिन सत्य का सवेरा तभी आएगा, मनुष्य के भीतर प्रकाश तभी जगमगाएगा, जब मानवजाति ऋषि दयानन्द के बताए वेद मार्ग पर चलेगी। इसलिए बाहर की दीवाली से बेहतर है कि हम वेदज्ञान से अपने अंतःकरण को प्रकाशित करें।

वैदिक धर्म के कल्याणकारी मार्ग पर संसार को अग्रसर करने वाले महर्षि दयानन्द सरस्वती को शत-शत नमन।- ***सम्पादक***

पृष्ठ 3 का शेष

ऐलोपैथिक औषधियों से बस जुकाम की पीड़ा को थोड़ा कम किया जा सकता है। इसलिए इस रोग को जड़ से मिटाने के लिए जड़ी-बूटियों से तैयार औषधियों से ही छुटकारा पाया जा सकता है। घरेलू उपचार भी जुकाम में बहुत फायदा पहुंचाते हैं। जिन लोगों को एलर्जिक जुकाम होता है, उन्हें इस बात की जानकारी करनी चाहिए कि उन्हें किस चीज से से एलर्जी होती है। जानकारी होने पर उन्हें एलर्जी होने वाली चीजों से बचकर रहना चाहिए। इसी के साथ ही उन्हें नाक व मुंह पर मास्क लगाकर रखना चाहिए। जिन्हें बार-बार जुकाम होने की शिकायत रहती हो उन्हें हमेक्षा नाक से ही सांस लेना चाहिए। विटामिन ए.सी. और डी. युक्त वस्तुओं को ज्यादा सेवन करना चाहिए।

जुकाम का जड़ी-बूटी से उपचार

- काले जीरे को जलाकर उसका धुआं सूंघने से जुकाम ठीक होता है।

- राई के तेल पैरों और पैरों के तजुवे पर मालिश करने से मस्तक की सर्दी और जुकाम एक रात में मिट जाते हैं। नाक पर इसके तेल की मालिश करने से नाक बहना तुरंत बंद हो जाता है।

- दो चम्मच अदरक का रस गर्म करके उसमें शहद मिला कर पीने से नजले-जुकाम का वेग कम होता है।

- चाय-पत्ती की जगह तेजपात के चूर्ण की चाय पीने से छींके आना और नाक बहना बंद होता है।

जुकाम का घरेलू उपचार - अगर नाक से ज्यादा पानी जा रहा हो तो जरा सी कपूर निगल लें।

-जुकाम के रोगी को अदरक का एक छोटा टुकड़ा नमक लगाकर खाना चाहिए।

-जुकाम के प्रति कभी भी लापरवाही न बरतें। जुकाम से व्यक्ति टी.बी. रोग का शिकार सहज ही हो सकता है। इसलिए कभी भी जुकाम की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। घरेलू उपचार पर भी यदि जुकाम ठीक न हो तो तब आपको योग्य डॉक्टर से अपना इलाज अवश्य करवाना चाहिए।

पृष्ठ 4 का शेष

गुप्ता जी और ओमप्रकाश जी के घर के भी दर्शन किये, जिसमे महर्षि दयानन्द जी कुछ दिन रुके थे, बुलंदशहर के ही शफीनगर गाँव भी गए, उन परिवारों के वंशजों से मिले जिस घर को कुछ समय के लिए महर्षि जी ने अपना निवास बनाया था, करणवास की वो जगह भी देखी जहाँ राव करणनसिंह की तलवार तोड़ी थी, इस यात्रा के दौरान स्वामी जी से जुड़े स्मृति स्थलों और उनसे जुड़े परिवारों ने सब यात्रियों का बहुत स्वागत किया, सतीश चड्ढा जी, सुखवीर जी, योगेश शास्त्री जी, उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान देवेन्द्रपाल जी समेत सभी आर्य मुसाफिरों के साथ यह यात्रा बहुत सुखद रही।

दयानन्द पैराडाइज स्कूल आबू रोड का नीरिक्षण

प्राचीन, आधुनिक और आध्यात्मिक शिक्षा का मिश्रण है विद्यालय

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी का गत दिनों माउंट आबू की तलहटी में अरावली श्रृंखला से घिरी खूबसूरत घाटी के बीच स्थित दयानंद पैराडाइज स्कूल, आबू रोड जाना हुआ। यहाँ जाकर देखा कि दयानंद पैराडाइज एक स्कूल के साथ आत्म-खोज की एक यात्रा भी है। प्राचीन (वैदिक संस्कृति) आधुनिक और आध्यात्मिक का एक अनूठा मिश्रण है, यहाँ बच्चों के बीच समय बिताकर एहसास हुआ कि बच्चों को उनकी रुचियों, प्रतिभाओं और योग्यताओं के अनुसार सीखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, वो भी बिलकुल परिवार वाले पालन-पोषण के माहौल बीच। स्कूल प्रबन्धक श्री एम. एल गोयल जी और प्रधानाचार्य प्रवीण आर्य जी के साथ वार्तालाप में पता चला कि आधुनिक पढाई के साथ स्कूल वेदों की भावना को जीवित और संरक्षित रखता है।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 6 नवम्बर, 2023 से रविवार 12 नवम्बर, 2023

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 08-09-10/11/2023 (बुध-वीर-शुक्रवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-23

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 8 नवम्बर, 2023

ओ३म्

आर्य समाज की पहल

आर्थिक रूप से कमजोर बारहवीं पास छात्रों
के आगे की पढ़ाई के लिए छात्रवृति योजना

आर्य प्रगति छात्रवृत्ति परीक्षा 2023

- पात्रता: आवेदन प्राप्ति की अंतिम तिथि तक बारहवीं कक्षा या समकक्ष कक्षा में उत्तीर्ण होना अनिवार्य है।
- आयु सीमा: आवेदन की अंतिम तिथि तक 16 से 25 वर्ष ।
- छात्रवृत्ति हेतु अभ्यर्थियों का लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार के आधार पर चयन किया जाएगा।
- पात्रता परीक्षा ऑनलाइन वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के माध्यम से ली जाएगी।
- पात्रता परीक्षा का विषय सामान्य ज्ञान और रिजनिंग पर आधारित होगा।

आवेदन की अंतिम तिथि 15 नवम्बर 2023

आवेदन करने के लिए वेबसाइट www.aryapragati.com पर जाए।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:
9311721172 E-mail: dss.pratibha@gmail.com

प्रतिष्ठा में,

ओ३म्

महर्षि दयानन्द के
200वीं जयंती वर्ष में

MMTC द्वारा शुद्ध चांदी के विशेष सिक्के

999.9 टंच 10 ग्राम MMTC के प्रमाणपत्र सहित
आकर्षक पैकिंग में उपलब्ध

स्वयं रखने व
उपहार देने हेतु
सुंदर स्मृति चिन्ह

MRP ₹2000
विशेष मूल्य ₹1100

संपर्क सूत्र:
9540040339

सीमित स्टॉक
जल्दी करें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा

वर्ष 2024 का कैलेण्डर प्रकाशित

मूल्य 1200/-रुपये सैंकड़ा

200 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (300/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150,
मो. 09540040339
ऑन लाइन खरीदें
www.vedicprakashan.com

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष एवं तार्किक समीक्षा के लिए
उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षण मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं

कृपया एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द जी की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें..

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

JBM Group
Our milestones are touchstones

TECHNOLOGY DRIVING VALUE
TOWARDS CREATING A
CLEANER | GREENER | SAFER
TOMORROW.

JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002
91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह